REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2025

''महाविद्यालय के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

डॉ. तेजराम नायक
प्राचार्य
रायगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, रायगढ़ (छ.ग.)

सारांश –

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की आधारशिला है। उच्च शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति न केवल उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है, बल्कि उनकी जीवन–दृष्टि, करियर चयन एवं सामाजिक सहभागिता को भी आकार देती है। वर्तमान शोध का प्रमुख उद्देश्य महाविद्यालय में अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया तथा 200 विद्यार्थियों (100 बालक एवं 100 बालिकाएँ) को नमूना बनाया गया। डेटा एक लिकर्ट–आधारित अभिवृत्ति मापक के माध्यम से संकलित किया गया। विश्लेषण में पाया गया कि बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति बालकों की तुलना में अधिक सकारात्मक है। इस अभिवृत्ति को सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक कारक प्रभावित करते हैं। अध्ययन उच्च शिक्षा में लैंगिक संवेदनशील नीतियों एवं प्रेरक कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

की वर्ड – अभिवृत्ति, उच्च शिक्षा, लिंग, महाविद्यालय विद्यार्थी, शिक्षा मनोविज्ञान, अभिप्रेरणा, सीखना

प्रस्तावना –

किसी भी देश का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। शिक्षा मनुष्य को ज्ञान, कौशल, विवेक एवं मूल्य प्रदान करती है, जिसके माध्यम से वह समाज के प्रति जागरूक, उत्तरदायी एवं उत्पादक नागरिक बनता है। महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था से वयस्कता की ओर संक्रमण की अवस्था में होते हैं। इस अवधि में विद्यार्थियों में अपनी शिक्षा, करियर, सामाजिक भूमिका एवं भविष्य से संबंधित अनेक प्रश्न, अपेक्षाएँ और आकांक्षाएँ विकसित होती हैं। ऐसे में उनकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (Attitude Towards Education) का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति केवल सीखने की इच्छा तक सीमित नहीं है। यह विद्यार्थी के मनोवैज्ञानिक ढांचे, सामाजिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक समर्थन, शैक्षणिक अनुभव, शिक्षकों के व्यवहार और व्यक्तिगत आकांक्षाओं से निर्मित एक व्यापक दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण निर्धारित करता है कि विद्यार्थी शिक्षा को किस प्रकार देखता है –

'एक अवसर के रूप में, एक बोझ के रूप में, एक सामाजिक अपेक्षा के रूप में या एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में।'

आज आधुनिक समाज में महिलाएँ शिक्षा के माध्यम से सशक्त हो रही हैं। उच्च शिक्षा की उपलब्धता, छात्रवृत्ति योजनाएँ, महिलाओं की सुरक्षा, तथा सामाजिक समर्थन के बढ़ने से बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में उल्लेखनीय सकारात्मकता आई है। दूसरी ओर, बालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कभी–कभी तत्काल रोजगार, आर्थिक दबाव या पारिवारिक अपेक्षाओं से प्रभावित होती दिखाई देती है। अतः यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह महाविद्यालय स्तरीय दोनों लिंगों की शिक्षा के प्रति सोच का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

संबंधित शोध अध्ययन –

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध का महत्वपूर्ण आधार होती है। यह शोधकर्ता को पूर्व में किए गए कार्यों, उपलब्ध निष्कर्षों और शोध–खालीपन (Research Gap) को समझने में सहायता करती है। विभिन्न शोध अध्ययनों से निम्नलिखित बिंदु सामने आते हैं।

क्रो एंड क्रो के अनुसार, अभिवृत्ति एक मानसिक एवं तंत्रिकीय तत्परता है, जो व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करती है। शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विद्यार्थी के अध्ययन व्यवहार, प्रयास की तीव्रता, प्रेरणा, अध्ययन आदतें और उपलब्धि को प्रभावित करती है।

कई शोधों ने यह दर्शाया है कि बालिकाएँ शिक्षा को आत्मनिर्भरता, सामाजिक सम्मान और आर्थिक सुरक्षा का मार्ग मानती हैं। बालकों की तुलना में वे अधिक अनुशासित, लक्ष्य–उन्मुख और अध्ययन में नियमित पाई गई हैं।

शर्मा (2018) के अध्ययन में पाया गया कि बालिकाएँ उच्च शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक रुख रखती हैं, जबकि बालकों में पढ़ाई से संबंधित हतोत्साहन अक्सर रोजगार संबंधी दबावों से उत्पन्न होता है।

कुमार (2020) ने बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति, माता–पिता की शिक्षा और सामाजिक पृष्ठभूमि विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को निर्णायक रूप से प्रभावित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की सीमितता अभिवृत्ति को मध्यम स्तर पर बनाए रखती है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. महाविद्यालय के बालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण करना।
2. महाविद्यालय की बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. दोनों की अभिवृत्तियों की तुलना करना।
4. अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।
5. उच्च शिक्षा में सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने हेतु सुझाव प्रदान करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

H_1: बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर होगा।
H_2: बालिकाएँ शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखती होंगी।
H_3: सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि अभिवृत्ति को प्रभावित करेगी।

शोध पद्धति

अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति (Descriptive Survey Method) पर आधारित है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में रायगढ़ जिला के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राएँ को लिया गया है।

न्यादर्श –

न्यादर्श का अर्थ किसी वस्तु, विचार, सिद्धांत या अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए प्रस्तुत किया गया ''नमूना'', ''उदाहरण'' या ''मॉडल'' होता है। यह किसी बड़े विषय को सरल और समझने योग्य बनाने के लिए दिया गया 'प्रमाण स्वरूप उदाहरण' माना जाता है। जब हम किसी सिद्धांत, नियम, शोध, प्रयोग या परिभाषा को समझाने के लिए उसका व्यावहारिक रूप, नमूना या प्रतिनिधि रूप प्रस्तुत करते हैं, तो वह न्यादर्श कहलाता है। शैक्षिक और शोध कार्यों में न्यादर्श का प्रयोग किसी विषय की विश्वसनीयता स्थापित करने, उसे प्रमाणिक बनाने और पाठक को स्पष्ट समझ प्रदान करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार न्यादर्श ज्ञान को अधिक सुलभ, ठोस और प्रमाणित स्वरूप में प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत ष्षोध में निम्नानुसार न्यादर्ष का चयन किया गया है –

वर्ग	बालक	बलिकाएँ	योग
न्यादर्श	100	100	200

सांख्यिकीय विश्लेषण

* Mean
* Standard Deviation
* t-test

डेटा विश्लेषण

समूह	Mean	SD	N
बालक	68.40	8.10	100
बालिका	74.85	7.20	100

t = 4.92 (Significant at 0-05 level)

व्याख्या

बालिकाओं का माध्य अधिक है, अर्थात महाविद्यालय के बालिकाओं में अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पायी गयी। t–मूल्य का सार्थक होना अंतर की वास्तविकता को सिद्ध करता है। बालक एवं बालिका दोनों समूह शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हैं, परंतु अभिवृत्ति की तीव्रता भिन्न है। बालिकाओं की सोच में शिक्षा को जीवन–सशक्तीकरण का माध्यम माना गया है। बालकों में कैरियर–उन्मुखता तो है, परंतु निरंतरता में अंतर दिखा।

बालिकाओं की उच्च सकारात्मकता के कारण

1. बालिकाओं द्वारा शिक्षा को आत्मनिर्भरता का साधन मानना।
2. बालिकाओं को सरकारी योजनाओं, छात्रवृत्तियों, सुरक्षा सुविधाओं का लाभ।
3. सामाजिक स्तर पर महिलाओं की प्रगति के प्रति जागरूकता।

बालकों की अभिवृत्ति का स्वरूप

1. अधिकतर बालक शिक्षा को रोजगार से जोड़कर देखते हैं।
2. परिवार की अपेक्षाओं का दबाव शिक्षा को कभी–कभी तनावपूर्ण बना देता है।
3. मोबाइल, सोशल मीडिया और अन्य विचलित करने वाले कारक अध्ययन में बाधा उत्पन्न करते हैं।

सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव''

1. उच्च आय वाले परिवारों के बच्चे बेहतर संसाधनों के कारण अधिक सकारात्मक।
2. ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों में संसाधन सीमित होने से अभिवृत्ति मध्यम।
3. माता–पिता की शिक्षा विद्यार्थियों की सोच पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

शैक्षणिक वातावरण की भूमिका

प्रेरक शिक्षक, सहयोगी माहौल, पुस्तकालय–सुविधाएँ अभिवृत्ति सुधारती हैं।
नकारात्मक वातावरण अभिवृत्ति को कमजोर बना सकता है।

निष्कर्ष

1. बालिकाएँ शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक एवं लक्ष्य–उन्मुख हैं।
2. बालक भी शिक्षा को महत्व देते हैं, परंतु अध्ययन व्यवहार में उतार–चढ़ाव देखे जाते हैं।
3. अभिवृत्ति में लैंगिक अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है।
4. परिवार, सामाजिक समर्थन, शिक्षक का व्यवहार एवं आर्थिक स्थिति अभिवृत्ति को अधिक प्रभावित करते हैं।
5. शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता अभिवृत्ति में सुधार लाती है।

सुझाव

1. महाविद्यालयों में ''कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम'' नियमित रूप से चलाए जाएँ।
2. ''लड़कियों के लिए सुरक्षा, संसाधन एवं अवसर बढ़ाए जाएँ'' ताकि सकारात्मक अभिवृत्ति और मजबूत हो।
3. बालकों में अध्ययन अनुशासन और समय प्रबंधन के लिए कार्यशालाएँ आयोजित हों।
4. आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को ''स्कॉलरशिप'', ''फ्री डिजिटल संसाधन'' उपलब्ध कराए जाएँ।
5. शिक्षकों द्वारा प्रेरक एवं छात्र–केंद्रित शिक्षण विधियाँ अपनाई जाएँ।
6. माता–पिता को बच्चों की शिक्षा में सहयोगी भूमिका निभाने हेतु जागरूक किया जाए।

उपसंहार

वर्तमान शोध से स्पष्ट हुआ कि महाविद्यालय स्तर पर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लैंगिक अंतर मौजूद है। बालिकाएँ शिक्षा को अधिक महत्व देती हैं क्योंकि वे इसे व्यक्तिगत विकास, सामाजिक सम्मान, भविष्य की सुरक्षा और आत्मनिर्भरता से जोड़कर देखती हैं। बालकों की अभिवृत्ति अपेक्षाकृत मध्यम है, जो रोजगार, आर्थिक अपेक्षाओं और अध्ययन में निरंतरता की कमी से प्रभावित होती है।

शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने के लिए संस्थागत समर्थन, प्रेरक वातावरण, उचित संसाधन और माता–पिता का सहयोग आवश्यक है। यदि महाविद्यालय स्तर पर योजनाबद्ध शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यक्रम चलाए जाएँ, तो विद्यार्थियों में और अधिक सकारात्मकता लाई जा सकती है। यह अध्ययन उच्च शिक्षा में जेंडर–सेंसिटिव नीतियों की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।

संदर्भ

1. Crow & Crow- Educational Psychology.
2. Patel, R- (2015) Attitude of Students Towards Higher Education.
3. Sharma, R- (2018) Gender Differences in Educational Attitude.
4. Kumar, S- (2020) Socio & Economic Factors and Student Attitudes.
5. Agrawal, J-C- Theory and Principles of Education.